सज्जनश्रीजी महाराज अभिनन्दन ग्रन्थ (फोल्डर नं. ९२०२८)

मुख्य टाइटल
समर्पण सुमन
आशीर्वचन
प्रकाशक के बोल
आदिवचन
एक धन्य अवसर की प्राप्ति
अनुक्रमणिका
प्रथम खण्ड – जीवन ज्योति -- १-१७८
जीवन ज्योति (जीवन चरित्र) -- १
प्रवर्तिनी सज्जनश्री म. के यशस्वी चातुर्मास की सूची -------------------------------------- ८८
प्रवर्तिनीश्री जी का शिष्या परिवार --- ९०
आदर्श माताश्री महेताबबाई लूनिया --- ९३
धर्मनिष्ठ श्रावक पिताश्री गुलाबचन्दजी लूनिया --- ९६
श्री केसरचन्दजी लूनिया व परिवार-परिचय -- १०२
गोलेच्छा परिवार परिचय --- १०५
श्रीमान कल्याणमलजी गोलेच्छा --- १०६
चरितनायिका केजीवन में नया मोड़ देने वाला बाफना परिवार ------------------------------- १०७
व्यक्तित्व परिमल-संस्मरण एवं प्रेरक प्रसंग -- १०९-१५४
कृतित्व दर्शन-साहित्य समीक्षा
प्रवर्तिनी सज्जनश्रीजी महाराज का अद्भुत अनुवाद-कौशल -------------------------------- १५५
आर्या सज्जनश्रीजी की काव्य साधना --- १५९
सफल अनुवाद करयित्री आर्यारत्न प्र. सज्जनश्रीजी -- १६६
एक श्रेष्ठ जीवन चरित्र-पुष्प जीवन ज्योति -- १६८
एक बहुआयामी समग्र व्यक्तित्व प्रवर्तिनी सज्जनश्री महाराज ------------------------------ १७१
द्वितीय खण्ड
आशीर्वचन-शुभकामनाएँ, अभिनन्दन-- १-३८
श्रद्धार्चन काव्यांजलियाँ -- ३९-६०
तृतीय खण्ड – इतिहास के उज्ज्वल पृष्ठ ---१-११८
खरतरगच्छ का संक्षिप्त परिचय --- १-३५
खरतरगच्छ का उद्भव -- १
आचार्य वर्धमानसूरि --- ५
जिनेश्वरसूरि -- ७
जिनचन्द्रसूरि --- ७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभयदेवसूरि -- ७
जिनवल्लभसूरि ---८
जिन-युगप्रधान दादा जिनदत्तसूरि -- १०
मणिधारी जिनचन्द्रसूरि --- ११
युगप्रवरागम जिनपतिसूरि --१२
जिनेश्वरसूरि (द्वितीय) --- १६
जिनप्रबोधसूरि ---१८
कलिकाल केवली जिनचन्द्रसूरि -- १९
दादा श्री जिनकुशलसूरि ---२१
जिनपद्मसूरि --- २३
जिनलब्धिसूरि --- २४
जिनचन्द्रसूरि -- २४
जिनराजसूरि -- २५
जिनभद्रसूरि -- २६
जिनचन्द्रसूरि -- २७
जिनसमुद्रसूरि --- २७
जिनहंससूरि -- २८
जिन माणिक्यसूरि --- २८
युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि -- २८
जिनसिंहसूरि ---३१
जिनराजसूरि -- ३२
जिनरत्नसूरि -- ३४
जिनचन्द्रसूरि -- ३४
जिनसुखसूरि -- ३४
जिनभक्तिसूरि -- ३५
जिनलाभसूरि -- ३५
चार दादा गुरुओं का संक्षिप्त जीवन परिचय --- ३६
क्रान्ति के विविधरूप तथा धार्मिक क्रान्तिकारक -- ३७
खरतगच्छ की संविग्न साधु परम्परा का परिचय --- ४४
सुखसागरजी म. का समुदाय -- ४४-५४
श्री जिनकृपाचन्द्रसूरिजी का समुदाय --- ५४-५६
श्री मोहनलालजी म.का समुदाय -- ५६-६४
सुखसागरजी म. के समुदाय की साध्वी परम्परा का परिचय -------------------------- ५९-६४
शिवश्रीजी म. का समुदाय -- ६५
स्व. आचार्यश्री जिनकवीन्द्रसागर सूरिजी म. -- ६७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खरतरगच्छीय साध्वी परम्परा -- ७०
खरतरगच्छीय की गौरवमयी परम्परा -- ७८
खरतरगच्छ के तीर्थ व जिनालय -- ८०
श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, जयपुर, एक परिचय -- १०६
प्र. सिंहश्रीजी के साध्वी समुदाय का परिचय -- १०९
खरतरगच्छाचार्यों द्वारा प्रतिबोधित गोत्र जिनका मूल गच्छ खरतर है -------------------------११८
चतुर्थ खण्ड-धर्म, दर्शन एवं अध्यात्म-चिन्तन ---१-११८
अर्ह का विराट स्वरूप – संघ प्रमुख चन्दन मुनि -- १
अप्पा सो परमप्पा – डॉ. हुकमचन्द्र जैन -- ५
जैन दर्शन में कर्म-सिद्धान्त – श्री नित्यानन्द विजयजी -- १५
स्वास्थ्य पर धर्म का प्रभाव – युवाचार्य महाप्रज्ञ -- १७
जैनधर्म में मनोविद्या – गणेश लालवाणी --- २०
धर्म-साधना के तीन आधार – श्री देवेन्द्र मुनि --- २७
जैनधर्म विश्वधर्म बन सकता है – काका कालेलकर --- ३६
अनिवर्चनीय आनन्द का स्रोत-स्वानुभूति – मुनिश्री अमरेन्द्र विजय ---------------------------- ३८
जैनदर्शन और योग दर्शन में कर्म-सिद्धान्त – रतनलाल जैन ---------------------------------- ४८
जैन शिक्षा-स्वरूप और पद्धति – डॉ. नरेन्द्र भानावत -- ५८
सम्यग् आचार की आधारशिला-सम्यक्त्व – साध्वीश्री सुरेशाश्रीजी ---------------------------- ६५
नमस्कार महामन्त्र-वैज्ञानिक दृष्टि – साध्वी श्री राजीमतीजी ------------------------------------- ७०
स्वरूप-साधना का मार्ग-योग एवं भक्ति – आचार्य मुनिश्री सुशीलकुमारजी --------------------- ७३
आत्मकेन्द्रित एवं ईश्वरकेन्द्रित धर्म-दर्शन – डॉ. मांगीलाल कोठारी ---------------------------- ७६
जैन हिन्दी काव्य में सामायिक – डॉ. अलका प्रचण्डिया -- ८२
जैनधर्म-स्वरूप एवं उपादेयता – महोपाध्याय चन्द्रप्रभसागर ----------------------------------- ८४
जैन साधक के षडावश्यक कर्म – महोपाध्याय चन्द्रप्रभसागर ---------------------------------- ८६
जर्मनी के जैन मनीषी डॉ. हरमन याकोबी - डॉ. पवन सुराणा ---------------------------------- ९२
सामायिक का स्वरूप व उसकी सम्यक् परिपालना – पं. कन्हैयालाल दक -------------------- ९५
अनेकान्तवाद् और स्याद्वाद् – डॉ. चेतन प्रकाश पाटणी -- १००
हिंसा घृणा का घर-अहिंसा अमृत का निर्झर – डॉ. आदित्य प्रचण्डिया ----------------------- १०४
क्रोध-स्वरूप एवं निवृत्ति के उपाय – साध्वी हेमप्रज्ञाश्रीजी ----------------------------------- १०७
जैन कला में तीर्थंकरो का वीतरागी स्वरूप – डॉ. मारुतीनन्दन तिवारी, डॉ. चन्द्रदेवसिंह ---- ११४
पंचम खण्ड – नारी-त्याग, तपस्या एवं सेवा की सुरसरि ---------------------------------- ११९-१८०
जैन आगमिक व्याख्या साहित्य में नारी की स्थिति का मूल्यांकन – प्रो. सागरमल जैन ------ ११९
भारतीय नारी-युग-युग में और आज – राष्ट्रसन्त मुनि श्री नगराज जी.डी. ------------------- १४३
जैन आगमों में वर्णित ध्यान-सधिकाएँ – डॉ. शान्ता भानावत ------------------------------ १५०
प्राकृत साहित्य में वर्णित शील-सुरक्षा के उपाय – डॉ. हुकमचन्द जैन ---------------------- १५५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवान महावीर की दृष्टि में नारी – विमल महेता -- १६२
सतीप्रथा और जैनधर्म - रज्जनकुमार --- १६३
अहिंसा अपरिग्रह के सन्दर्भ में नारी की भूमिका – श्रीमती सरोज जैन ---------------------- १६९
नारी-मानवता का भविष्य – सुरेन्द्र बोथरा --- १७३
जैनधर्म को जनधर्म बनाने में महिलाओं का योगदान – आर्या प्रियदर्शनाश्रीजी --------------- १७८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org